

---

# Shri Jagannatha Ashtakam

---

## श्रीजगन्नाथाष्टकम्

---

### Document Information



---

Text title : Jagannatha Ashtakam 3

File name : jagannAthAShTakam3.itx

Category : aShTaka, vishhnu, jagannatha, viShNu, krishna

Location : doc\_vishhnu

Author : Himanshu Gaud

Transliterated by : Prakash Ranganath

Proofread by : Prakash Ranganath

Latest update : May 23, 2026

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

May 24, 2026

*sanskritdocuments.org*

---



श्रीजगन्नाथाष्टकम्



शिवप्राणरूपं जगत्प्राणरूपं  
सुभूपाधिभूषं सदा शान्तरूपम् ।  
अरूपानुरूपोपकारप्ररूपं  
सुरूपं जगन्नाथमुद्गावयामः ॥ १ ॥

अलक्ष्यैकलक्ष्यानुलक्ष्यप्रविष्टं  
समीक्षानिरीक्षापरीक्षाभ्यदृष्टम् ।  
विवक्षुप्रवाक्षु प्रविष्टं विशिष्टं  
जगन्नाथमुद्गावयामोऽर्चयामः ॥ २ ॥

क्वचिच्छैलशीलैः क्वचित्पुष्पशीलैः  
क्वचिद्धैर्यशीलैः क्वचिन्नृत्यशीलैः ।  
क्वचित्तापसैर्भक्तिशीलैस्सुवन्द्यं  
जगन्नाथसन्नाथमुद्गाथयामः ॥ ३ ॥

समुद्रैस्सुमुद्रैर्विमुद्रैर्नृतं तं  
विभावप्रभावानुभावप्रभातम् ।  
सुकाण्डं हरिं ब्रह्मभाण्डे भ्रमन्तं  
जगन्नाथपुर्यां वसन्तं नमामः ॥ ४ ॥

अनाथैकनाथं सुगाथैकगाथं  
समस्थव्यवस्थैकपन्थानमाद्यम् ।  
विबाधप्रबाधं समुद्रादगाधं  
समुद्रप्रियं तं मुदा सुस्मरामः ॥ ५ ॥

श्रुतिस्मार्तसिद्धं नितान्तप्रसिद्धं  
समस्तार्थवत्सत्त्वतत्त्वानुविद्धम् ।  
विवृद्धप्रवृद्धं समृद्धैकसिद्धं  
विशुद्धं जगन्नाथमाचिन्तयामः ॥ ६ ॥

विभिन्नं हि निर्भिन्नरूपं विभान्तं  
महान्तं हिमांश्वेककान्तं भवान्तम् ।  
महामेधिमेषाप्रदं तं स्वधान्तं  
हरिल्लोककान्तं समाराधयामः ॥ ७ ॥


अखण्डं च तत्सच्चिदानन्दरूपं  
अवाक्चित्तसङ्गोचरं गोभरं तम् ।  
स्मरान्तं स्मरारामदं रामरूपं  
सदा तद्धितं भीकृदन्तं स्मरामः ॥ ८ ॥

हरिरक्ताऽद्य मज्जिह्वा तुलसीपत्रसेवनात् ।  
अतोऽष्टकं करोम्येतज्जगन्नाथगुणानुगः ॥ ९ ॥


इति श्री हिमांशु गौडविरचितं श्रीजगन्नाथाष्टकं सम्पूर्णम् ।

Encoded and proofread by Prakash Ranganatha

---

——  
*Shri Jagannatha Ashtakam*

pdf was typeset on May 24, 2026

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

